952
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1203/10/74

आह्वानांक Call No. ______

अवाप्ति सं० Acc. No. 952

६/५॥

00/361

बम के गोले

परतंत्रता-पाप हरने को, बज्र गगन से टूट पड़े।
स्वेच्छाचार दमन करने को, बम के गोले फूट पड़े॥

लेखक
बलभद्र प्रसाद गुप्त, विशारद 'रसिक'
शान्ति-सदन, प्रयाग।

प्रकाशक
प० महाबीर प्रसाद जी शुक्लः—
साहित्य-सदन कार्यालय,
कटरा प्रयाग

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण] [मूल्य एक आना

Recd from S.P. Asansol.

891.431
G959B

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
24 MAR 1931

राष्ट्रीय झंडा

राष्ट्रीय झंडा फहराता ।
हरा, सफेद, लाल लहराता ।।
नव जीवन, सरसाने वाला ।
स्वतंत्रता, दरसाने वाला ।।
ऐक्य-विन्दु बरसाने वाला ।
सुख, सम्पति, वैभव का दाता ।
राष्ट्रीय झंडा फहराता ।।

क्यों न तुझे हम शीश नवायें ?
क्यों न तुझे हम प्राण चढ़ायें ?
क्यों न तुझे तन, मन से ध्यायें ?
भावी-भारत - भाग्य विधाता ।
राष्ट्रीय झंडा फहराता ।।

युवकों के आँखों का तारा ।
कृषकों का सर्वस्व - सहारा ।।
दीन, दरिद्र गणों का प्यारा ।
तेरा रङ्ग न किसको भाता ?
राष्ट्रीय झंडा फहराता ।

—:o:—

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 952
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

बम के गोले

श्री गांधी महराज ने, चर्खा दिया चलाय।
यूरोप वाले लोग सब, रहे आज घबड़ाय॥

श्री गांधी जी महराज ने जो, ये चर्खा-चक्र चलाया है।
मानों मशीन गन के गोले, यूरोप के मिलों पर ढाया है॥
सरकार समझती है मन में, यह हिन्दुस्तान हमारा है।
उसको पर है यह ध्यान नहीं, 'हक़ अपना किसे न प्यारा है?'
अच्छा गर यही समझती है, समझे हमको परवाह नहीं।
हम जान लड़ा देंगे लेकिन, मुख से निकलेगी आह नहीं॥
सत्याग्रह की गति देख देख, यूरोप वाले थर्राते हैं।
भय खाते हैं, गुर्राते हैं, गरमाते हैं, शरमाते हैं॥
हैरत में सभी हुक्काम पड़े, "तादाद क्यों बढ़ती जाती है?
हम जितनी आग बुझाते हैं, क्यों और भड़कती जाती है?
यह सत्याग्रह है कौन बला, कुछ नहीं समझ में आता है?
आज़ादी हासिल करने को, चरखा कब किसने काता है?"
लन्दन वाले सब सोच रहे 'ईसा! क्या होने वाला है?
क्या भारत अब हम लोगों के हाथों से जाने वाला है?'

थे लङ्का वालों ही की तरह, मानी लङ्काशायर वाले।
मैनचेष्टर, लिवरपूल भी थे, अपने वैभव पर मतवाले॥
लेकिन रावण की तरह आज, है उनका नष्ट ग़ुरूर हुवा।
अधिकार और पशु-बल का मद, क्षण भर में चकनाचूर हुवा॥
कुछ बुद्धी काम नहीं देती, वे भूल गये विज्ञान हैं अब।
हा! कहां गये ताक़त, कुव्वत, हिम्मत, हिकमतओ ज्ञान हैं सब?

साठ फ़ी सदी हो गईं, मिलें वहां बेकार।
चरखे रूपी तोप की, अद्भुत पहुंची मार॥

अत्याचारी हुक्कामों को, सरकार सज़ा देती है नहीं।
अन्यायी दमन नीति को भी, अपने वापस लेती है नहीं॥
वह बड़े बड़े नेताओं को जेलों में छोड़ समझती है।
'यह सत्याग्रह रुक जायेगा गांधी जी की क्या हस्ती है'?
यह गवर्नमेन्ट को ध्यान नहीं, जनता ही राजा का बल है।
करता औ कर्म प्रजाही है, राजा तो कारण केवल है॥
है बँध सकती ज़ंजीरों से, क्या आज़ादी की चाह कभी?
क्या देश-भक्त निज निश्चय से, हैं हो सकते ग़ुमराह कभी?
अच्छे अच्छे मंत्री हैं मिले, जब उसे लार्ड इर्विन के सम॥
फिर बतलाओ तो क्यों करदे, वह अपनी दमन-प्रणाली कम?
भोले भारत की गवर्नमेन्ट, गर्वित है निज अधिकारों से।
अपने को सुरक्षित जान रही, लाठी के प्रबल प्रहारों से॥
बस यही ख़्याल कर के वह, मार्शल ला जारी करवाती है।
भारत के कोने कोने को जलियाँवाला बनवाती है।

जाने कितने निर्दोषों का, सर डंडे द्वारा टूटा है?
डन्डे के ही बल से तुमने, सरताज हमारा लूटा है॥

जलियाँवाला बाग़ की, क्यों न करें हम याद?
शोलापुर के ज़ुल्म ने, हमें किया आज़ाद

जब चरखे की झनकार हुई, लीवरपुल हैरत में आया।
इंगलैंड उठा घबड़ाय और, मैनचेष्टर भी है थर्राया॥
रीडिंग ने भी रीडिंग छोड़ा, व्याकुल होकर अखबारों का।
हेली भी हिलने लगे और, बल भूल गये हथियारों का॥
उनके दिमाग़ की दरिया में, सन सत्तावन-तूफ़ान उठा।
अथवा बन्दर के बच्चे सा, उनका सोया अभिमान उठा॥
उनके ख़याल में आ पहुंचे, ताँतिया भील अश्वारोही।
लक्ष्मीबाई, टिकेन्द्रजित सिंह, औ नाना साहब विद्रोही॥
पल भर में आंखें लाल हुईं, ड्रेस पहना झटपट सरकारी।
शिमला पहाड़ पर से दहाड़ कर, आर्डिनेन्स किये जारी।

यद्यपि गाँधी आज हैं, कारागृह में बन्द।
किन्तु उन्हीं के तेज से, भारत है स्वच्छन्द॥

सारी दुनिया में सोचो तो, तुम शिक्षित सभ्य कहाते हो।
सब से बढ़ कर कर्तव्यनिष्ठ, तुम अपने को बतलाते हो॥
कहते हो 'सारे जग में हैं, हम से बढ़ कर के बीर नहीं।
हमको परास्त करने के लिये, है रचा गया शमशीर नहीं॥
पर भारत के धन से तुमने, लन्दन को धनी बनाया है।
भोले भारत को ग़ैरों से, हा। भिक्षा तक मंगवाया है॥

लन्दन के दीन ग़रीब जो थे, बन गये वे कोठीवाल वहीं ।
भारत के धनी कुबेरों को, मिलता है भोजन आज नहीं ॥
जिन सिक्ख, पठानों के बल से, करते थे तुम नित मनमानी ।
जो लोग तुम्हारे राज्य और, शासन के थे सच्चे बानी ॥
उन बीर बहादुर क़ौमो को, तुमने बिलकुल बर्बाद किया ।
उपकार किये थे तुम पर जो, तुमने न उन्हें कुछ याद किया ।
शोलापुर, पेशावर ने है, सभ्यता तुम्हारी देख लिया ॥
निर्दोषों और निशस्त्रों पर, तुमने गन की बौछार किया ।
डायर ने कर्म किये हैं जों, वह बीरों के था योग्य नहीं ।
अपनी जनता पर ज़ुल्म करे, वे कायर हैं, शासक हैं नहीं ॥
यदि मान लिया नादानी, मानव जाती से ही होती है ॥
लेकिन पछतवा ही उनके, पापों की कालिख धोती है ।
पर सोचो तो तुम प्रायश्चित, करने में भी शरमाते हो ।
यदि कहते हैं हम 'न्याय करो' तो भय तुम हमें दिखाते हो ॥
ओडायर अत्याचारी को, तुम पेंशन अब भी देते हो ।
हम दीन भिक्षुकों, कृषकों से, निज कर वसूल कर लेते हो ॥
ज़ुल्मी ! ज़ालिम ! तुमने स्वेच्छाचारों की सीमा पार किया ।
पशुओं का नहीं, मनुष्यों का, तुमने है हाय ! शिकार किया ॥
तुम भूल गये हो आज इसे, ज़ुल्मी का दिया न बरता है ।
जगदीश स्वयं दुखियों का दुख, अवतारी होकर हरता है ॥
अच्छा, जो करो उचित है तुम्हें, तुम भारत के अधिकारी हो ।
आश्चर्य ! महा आश्चर्य ! कि तुम हुक्काम भी हो, व्योपारी हो ॥

हँसना औ गाल फुलाना दोनों, हो सकते हैं साथ नहीं।
व्यौपारी हो तुम राजनीति में, छोड़ो ख़ूनी हाथ नहीं।
यदि शासक हो तो व्यौपारिक, कामों को अपने दूर करो।
विद्या, उद्योग, कला, कौशल से भारत को भरपूर करो॥

नेताओं को छोड़ कर, कीर्ति प्राप्त कर लेव।
प्यारे भारत वर्ष को, होमरूल दे देव॥

है नौकर शाही समझ रही, यह आन्दोलन रुक जायेगा।
नेतागण बन्दीगृह में हैं, संदेशा कैसे आयेगा?
प्यारे पटेल ने त्यागपत्र, पार्लियामेन्ट में पहुँचाया?
तिस पर भी इर्विन के दिमाग़ में कुछ भी नहीं असर आया॥
अब भी वे दमन नीति से हैं, सत्याग्रह को ललकार रहे।
बम के गोलों से जनता के, बल का वे कर प्रतिकार रहे॥
वे समझ रहे नेताओं को, हम बन्दीगृह में रक्खेंगे।
जंजीर गले में डाल, मौज से मजे यहां के चक्खेंगे॥
भारतवासी? रक्खो ये याद, बिलकुल फ़िज़ूल ये युक्ती है।
तैंतिस करोड़ को क़ैद करें, ऐसी न किसी में शक्ती है॥
है एक यत्न बेशक, भारत के चारों ओर दिवाल धरें।
इस तौर से सारे भारत को, कारागृह में वे क़ैद करें॥
लेकिन परिणाम यही होगा, उनको स्वराज्य देना होगा।
सीधे सीधे उनको रस्ता, लन्दन का अब लेना होगा॥

पूछो तो हिन्दुस्तानी जब, करते हैं इनकी क़दर नहीं।
यह सभ्य क़ौम बेशर्मी से, फिर क्यों अबतक हैं ठहर रहीं ?

उनको तो यह चाहिये, तज दें हिन्दुस्तान।
सत्याग्रह की आग में, व्यर्थ न हों बलिदान॥

सी० आई० डी० या .खुफ़िया वालों का हम ध्यान न धरते हैं।
यात्री चलते ही रहते हैं, कुत्ते भूँका ही करते हैं॥
वे तो .खुशामदी खच्चर हैं, उनको भारत का .ख्याल नहीं।
बन जावेंगे वे गवर्नमेन्ट, के द्वारा कोठीवाल वहीं॥
बस आशा यही लगा कर हैं, वे करते आज चापलूसी।
लेकिन बदले में पावेंगे, वे खाक, धूल, चोकर, भूसी॥
उनसे अब एक प्रार्थना है, वे अपने को न तबाह करें।
शोलापुर का दुखदृश्य देख, कर एक बार तो 'आह' करें॥
निर्दोष, वतन के जाँनिसार, बीरों से व्यर्थ न डाह करें।
पेशावर बम-बौछार देख, कर बृटिश राज्य की चाह करें।
पहले तो आश्वासन दे कर, पीछे से धता बुत़ावेंगे।
सब काम करा कर के तुम को, पीछे रस्ता बतलावेंगे॥
यह सभ्य लोग ऐसे ही हैं, पहले इनका इतिहास पढ़ो।
पीछे से इनकी सहायता, के लिये समझ कर पैर धरो॥
सिक्खों की सोचो तो, इन लोगों ने दुर्गति भरपूर किया।
जिस डाली पर थे पले, उसी का मूल काट मजबूर किया॥

चरखा-चक्र चला जभी; दुःख हुवे सब दूर।
तौक़ ग़ुलामी का हुआ; टूट टूट कर चूर॥

हमने तो अब यह ठान लिया, माता पर जीवन दे देंगे
या तो मर कर मिट जावेंगे, या आज़ादी ही ले लेंगे॥
प्राणों की बाज़ी लगा दिया; देखेंगे, अब क्या होता है?
हिन्दोस्तान जग जाता है, या फिर पहले सा सोता है?
जगदीश! तुम्हारी आशा है, तुम न्यायी बड़े कहाते हो।
हम लेते हैं अवतार धर्म-रक्षण-हित, तुम बतलाते हो॥
पृथ्वी पर जब बढ़ जाते हैं, पापी, अन्यायी, अविचारी।
यह बचन आप ही का तो है, 'हम होते हैं तब अवतारी'॥
'निर्दोष आत्मायें जब जेलों में, जा कर दुख सहती हैं।
अति शान्ति पूर्वक तिस पर भी, निज प्रण पर क़ायम रहती हैं॥
जब निर्बल, सबलों के द्वारा, दुनिया में सताये जाते हैं।
जब निर्धन, पूँजी पतियों के, द्वारा ठुकराये जाते हैं॥
जब शासक, शासित लोगों पर, करने लगते हैं मनमानी।
या जब जब होने लगती हैं; धन, धर्म, सभ्यता, की हानी।
तब तब तुम हो कर अवतारी, दुखियों का दुःख मिटाते हो।
पापों की हस्ती मिटा, पुण्य की विजय-ध्वजा फहराते हो'॥

इससे हमने प्रण किया, सुनिये हे सर्कार!
या तो मर मिट जांयगे, या लेंगे अधिकार॥

अब वही वक्त. है आ पहुंचा, इसमें है कुछ सन्देह नहीं।
है बम के गोलों के द्वारा, जनता का रक्षित देह नहीं॥
निर्दोष पुरुष भी जेलों में देखो तो अब दुख सहते हैं।
घायल हो गन की गोली से, देखो तो हाय! तड़पते हैं॥
यदि यही तुम्हारी इच्छा है, तो हमको भी परवाह नहीं।
हम जीवन, प्राण सौंप देंगे, पर मुख से होगी आह नहीं॥
लेकिन रखना ये याद कि फिर 'करुणामय' नहीं कहाओगे।
अपने को 'सर्वान्तरयामी' सोचो कैसे बतलाओगे?
मोहन! बतलाओ दोष है क्या, जो तुम दीनों को भूल गये?
पशु जान हमें हे न्यायनिष्ठ! शासक गण हैं अति फूल गये॥
वे तो हैं यही विचार रहे, शासित मिट्टी के पुतले हैं।
जनता का नाश देखने को, बस इसीलिये वे मचले हैं॥
जिन जिन सबबों से हे कृपालु! तुम नर तन धारण करते हो।
वे कारण सभी उपस्थित हैं, फिर क्लेश न तुम क्यों हरते हो?
जल्दी आओ दुख हरो नाथ! हम कब से आश लगाये हैं?
अब सहा नहीं जाता है दुख, प्रभुवर! हमने अति पाये है॥

जगन्नाथ! जगदीश! अब, जग में लो अवतार।
गर्वीलों का गर्व हर, मेटो स्वेच्छाचार॥
चरखा-चक्र चले यहाँ, घर घर में भगवान!
जिसके प्रबल प्रताप से, जागे हिन्दुस्तान॥

—:o:—

भारत गौरव

(१)

दिखला रहा हिमालय, अपनी छटा निराली ।
चरणों को चूमता है, जल-राशि शक्तिशाली ॥
गोदावरी सी नदियां, निर्मल छटा दिखातीं ।
हल्दी सी घाटियां हैं, बर बीरता सिखातीं ॥
संसार का रहा जो, हर बात में सहारा ।
हिन्दोस्तान ही वह, प्रिय देश है हमारा ॥

(२)

त्यागी तिलक ने सच्चा, पथ है जहां दिखाया ।
श्री लाजपत ने लज्जा, रखना जहां सिखाया ॥
अर्जुन सदृश जहाँ थे, निज शत्रुओं के घालक ।
अभिमन्यु, ध्रुव व लव, कुश, के सम जहां थे बालक ॥
बहती जहां है गङ्गा, यमुना की दिव्य धारा ।
हिन्दोस्तान ही वह, प्रिय देश है हमारा ॥

(३)

मनु, याज्ञवल्क, नारद के सम जहां यती थे ।
प्रह्लाद, अत्रि, गौतम के सम जहां व्रतीं थे ॥
पैदा हुये जहां थे, श्री कृष्ण वृजविहारी ।
श्री भीष्म से जहां थे, विख्यात ब्रह्मचारी ॥

जिसने दिखा दिया है, आत्मोत्सर्ग प्यारा।
हिन्दोस्तान ही वह, प्रिय देश है हमारा॥

(४)

विन्ध्या की पुण्य-प्रतिभा, दिखला रही अनोखी।
काश्मीर की छटा है, बैकुंठ से भी चोखी॥
बिदुला तथा सुमित्रा, सी थीं जहाँ पै माता।
श्री रामचन्द्र से थे, जग के जहां बिधाता॥
तैंतिस करोड़ लोगों के, आंख का सितारा।
हिन्दोस्तान ही वह, प्रिय देश है हमारा॥

—:०:—

चेतावनी

जाओ जाओ न आंखें दिखाया करो।
तुम्हारे सभी भेद हम जानते हैं, सो बातें न बेढब बनाया करो॥
पहले मुहब्बत बढ़ाकर के पीछे से, चालें न ऐसी चलाया करो।
बेक़स ग़रीबों निहत्थों के ऊपर, गोले न बम से गिराया करो॥
नहीं तुमसे कुछ काम है अब हमारा न उलटी औ सीधी सिखाया करो।
आज़ाद करने में ज़ालिम ! न ज़ुल्मों के झूठे अड़ंगे लगाया करो॥
गाढ़े पसीने के ज़र को बिना दोष, अब से न लूटो, लुटाया करो॥
तोपों के बल से न दीनों किसानों के ऊपर, लगानें बढ़ाया करो।
हाय ? बातें न रङ्गी बिरङ्गी करो, मत हक़ों को हमारे दबाया करो॥

—:०:—

अमर शहीद यतीन्द्र नाथ

(१)

ओ ज़ालिम ! जल्लाद ! न ढा तू, दीन गणों का पर्ण-कुटीर।
बहने दे उन पर स्वतंत्रता का, सुन्दर स्वच्छन्द समीर ॥
ओ ज़ालिम ! मत कर स्व सभ्यता पर, तू आज व्यर्थ अभिमान।
ओ नृशंष ! निज न्याय-कथा का, मत कर झूठा गौरव-गान ॥

(२)

क्या अनित्य तू हो सकता है, हर कर प्रिय यतीन्द्र के प्राण ?
देश-प्रेम के सम्मुख वह तो तुच्छ समझता था निर्वाण ॥
आह ! कभी क्या मिट सकता है, तेरे पट का खूनी दाग़ ?
क्यों न शान्त मानस में भी, वह धधका देगा भीषण आग ?

(३)

चल न सकेंगे अधिक दिनों तक, तेरे निष्ठुर स्वेच्छाचार।
देना ही होगा तुझको, जनता के जन्म-सिद्ध अधिकार ॥
सावधान ! तेरे अत्याचारों का, अब होता है अन्त।
सावधान ! अब तुझे त्याग कर, जाता है सौभाग्य-वसन्त ॥

(४)

मर कर के भी है तुमने, अमरत्व प्राप्त कर लिया यतीन्द्र !
यतियों को भी प्राण-दान की, शिक्षा तुमने दिया यतीन्द्र !
आंखों के सम्मुख यद्यपि तुम, हुये आज आँखों की ओट।
किन्तु-भारतीयों के दिल पर, सदा रहेगा अङ्कित चोट ॥

ज़माने की चाल

संसार जानता है, हमको नहीं बताना।
हम बेकसों ने देखे हैं राज्य ज़ालिमाना॥
तैमूरलङ्ग की भी, देखी थी हमने क़ूवत।
औरङ्गज़ेब का भी, देखा था आबोदाना॥
वह दृश्य नादिरी का, आँखों में फिर रहा है।
देखा था चापलूसों का मालोज़र कमाना॥
तुग़लक के पीतलों का, सिक्का था हमने देखा।
जङ्गल में घेर कर के रैयत का खूं बहाना॥
ओडायरी भी देखी, जीवन निसार कर के।
डायर ने जानवर से, भी तुच्छ हमको जाना॥
जलियानबाग़ की भी, हत्या है हमने देखी।
देखा है क़ायरों का, शेरो बबर कहाना॥
देखी है शोलापूर में, वह फ़ौज की हुकूमत।
प्यारी ग़रीब जनता पर गोलियाँ चलाना॥
देखा है गान्धी के, भक्तों को गोली खाते।
देखा फिरङ्गियों के अन्याय का ज़माना॥
कागज़ के सिक्के उड़ते, अब तो हरेक घर में।
सोने व चाँदी का अब, बिलकुल नहीं ठिकाना॥

—:०:—

भारत के रहने वालो

क्यों सो रहे हो अब तक, भारत के रहने वालो ?
अपनी पुरानी हालत, पर भी नज़र तो डालो ॥
अर्जुन व राम ने था, क्या क्या सितम उठाया ?
उनका सुयश बढ़ाओ, हिन्दोस्तान वालो ॥
रावण ने निज प्रजा पर, क्या क्या थे ज़ुल्म ढाये ?
पर नाम भी नहीं है, ऐ याद रखने वालो ॥
वो ही रहीम अब भी, दरम्यान में है देखो ।
लेगा ख़बर तुम्हारी, दुख के उठाने वालो ॥
हर्गिज़ न ख़ौफ खाना, गन औ मशीनगन का ?
करने दो ज़ुल्म उनको, ऐ आत्म-शक्ति वालो ॥
चुपचाप सहलो बीरो ! सीने पै गन की गोली ?
हो 'आह' भी न मुख से, ऐ ख़ून रखने वालो ॥
बहनें भी पिट रही हैं, डंडों औ लाठियों से ?
इज्ज़त हो क्यों गंवाते, इज्ज़त पै मरने वालो ?
कितने ही मर मिटे हैं, कितने पड़े हैं घायल ?
उन पर निगाह डालो, आज़ाद रहने वालो ?
इतने सितम पै क्यों तुम, बे होश से पड़े हो ?
क्यों मौत से हो डरते, ऐ ज़ुल्म सहने वालो ?
मरने के बाद भी तो, होगा यहीं पै आना ।
फिर क्यों हो हिचकिचाते गीता के पढ़ने वालो ?

—०—

बन्द नहीं होने का

नाम मिट जाय, सर्वस्व लुट जाय, बिक—
जाय, कौड़ियों के मोल घर, द्वार सोने का।
बांस बज जाय, बोटी बोटी कट जाय पर,
याद रहे, लेंगे नहीं नाम कभी रोने का॥
लेश भी न दुःख होगा, दिल में 'रसिक' कवि,
आन पर, मान पर, प्राण-धन खोने का॥
तोप लग जाय, बन्दूक चल जाय पर,
स्वाधिकार-समर है बन्द नहीं होने का॥

डट गये आज

पाया था शरण जिस डाल पर काटने में;—
वही दृढ़ डाल, नहीं आती तुम को है लाज।
लवा से लुकोगे, होगी शान किरकिरी सारी,
धावा बोल देंगे जो 'रसिक' बन कर बाज॥
माँगते फिरोगे भीख, आयेगी तबाही घोर,
लुटेंगे नवाबी ठाट, दूर होंगे सुख-साज।
उबल उठा है जोश, सावधान, सावधान,
पास मत आना, भारतीय डट गये आज॥

—:०:—

पं० बलदेवप्रसाद मिश्र के प्रबन्ध से मिश्र प्रिंटिंग वर्क्स
प्रयाग में छपा।